त्रिपुरातिलक स्तोत्रं(कल्पशाखिस्तवः)

कल्पशाखिगणसत्प्रसून मधुपानकेलि कुतुकभ्रमत्
षट्पदारवमनोहरे कनकभूधरे ललितमंडपे ।
अत्युदारमणिपीठमध्यविनिवासिनीं अखिलमोहिनीं
भक्तियोगसुलभां भजे भुवनमातरं त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 1

एककाल समुदीयमान तरुणार्ककोटिसदृशस्फुरत्
देहकांतिभर धोरणीमिलन लोहितीकृत दिगंतराम् ।
वागधीतविभवां विपद्यभयदायिनीं अखिलमोहिनीं
आगमार्थ मणिदीपिका मनिशमाश्रये त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 2

ईषदुन्मिषद मर्त्यशाखि कुसुमावली विमलतारका-
वृंदसुंदर सुधांशुखंड सुभगीकृताति गुरुकैशिकाम् ।
नीलकुंचित घनालकां निटिल भूषणायत विलोचनां
नीलकंठ सुकृतोन्नतिं सततमाश्रये त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 3

लक्ष्महीन विधुलक्षनिर्जित विचक्षणानन सरोरुहां
इक्षुकार्मुक शरासनोपमित चिल्लिका युगमतल्लिकाम् ।
लक्षये मनसि संततं सकल दुष्कृतक्षय विधायिनीं
उक्षवाहन तपोविभूति महदक्षरां त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 4

© 2022 Vedam Nadam

ह्रीमद प्रमद कामकौतुक कृपादि भावपिशुनायत
स्निग्धमुग्ध विशदत्रिवर्ण विमलालसाल सविलोचनाम् ।
सुंदराधर मणिप्रभामिलित मंदहास नवचंद्रिकां
चंद्रशेखर कुटुंबिनी मनिशमाश्रये त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 5

हस्तमृष्टमणि दर्पणोज्ज्वल मनोज्ञदंड फलकद्वये
बिंबितानुपम कुंडलस्तबक मंडितानन सरोरुहाम् ।
स्वर्णपंकज दलांतरुल्लसित कर्णिकासदृश नासिकां
कर्णवैरिसख सोदरी मनिशमाश्रये त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 6

सन्मरंदर समाधुरी तुलन कर्मठाक्षरसमुल्लस-
न्नर्मपेशल वचोविलास परिभूत निर्मलसुधारसाम् ।
कम्रवक्त्र पवनाग्रह प्रचल दुन्मिषद्भ्रमरमंडलां
तुर्महे मनसि शर्मदा मनिशमंबिकां त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 7

कम्रकांतिजित तारपूर मणिसूत्र मंडल समुल्लसत्
कंठकांड कमनीय तापहृत कंबुराज रुचिडंबराम् ।
किंचिदानत मनोहरां सयुगचुंबिचारु मणिकर्णिकां
पंचबाण परिपंथिपुण्यलहरीं भजे त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 8

© 2022 Vedam Nadam

हस्तपद्मलस दिक्षु चाप सृणि पाश पुष्पविशिखोज्ज्वलां
तप्तहेम रचिताभिराम कटकांगुलीय वलयादिकाम् ।
वृत्त निस्तुल निरंतराल कठिनोन्नत स्तनतृणीभव-
न्मत्तहस्तिवर मस्तकां मनसि चिंतये त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 9

लक्षगाढ परिरंभ तुष्टहर हासगौर तरलोल्लसत्
चारुहार निकराभिराम कुचभारतांत तनुमध्यमाम् ।
रोमराजि ललितोदरीमधिक निम्ननाभि मवलोकये
कामराज परदेवता मनिशमाश्रये त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 10

ह्रीरमंडल निरंतरोल्लसित जातरूप मयमेखला
चारुकांति परिरंभसुंदर सुसूक्ष्मचीन वसनांचिताम् ।
मारवीर रसचातुरी धृत धुरीण तुंग जघनस्थलां
धारये मनसि संततं त्रिदशवंदितां त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 11

सप्तसप्त किरणानभिज्ञ परिवर्धमान कदलीतनु-
स्पर्धिमुग्ध मधुरोरु दंडयुग मंदितेंदु धरलोचनाम् ।
वृत्तजानुयुग वल्गुभाव जित चित्तसंभव समुद्गकां
नित्यमेव परिशीलये मनसि मुक्तिदां त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 12

© 2022 Vedam Nadam

कंठ कांड रुचिकुंड ताकरण लीलया सकल केकिनां
जंघया तुलित केतकी मुकुल संघया भृत मुदंचिताम् ।
अंबुजोदर विडंबिचारु पदपल्लवां हृदयदर्पणे
बिंबितामिव विलोकये सततमंबिकां त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 13

लभ्यमान कमलार्चन प्रणतितत्परै रनिशमास्थया
कल्पकोटिशत संचितेन सुकृतेन कैश्चन नरोत्तमैः ।
कल्पशाखिगण कल्प्यमान कनकाभिषेक सुभगाकृतिं
कल्पयामि हृदि चित्पयोजन वषट्पदीं त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 14

ह्रीमिति प्रथित मंत्रमूर्ति रचलात्मजेत्युदधि कन्यकेत्
अंबुजासन कुटुंबिनीति विविधोपगीत महिमोदयाम् ।
सेवकाभिमत कामधेनु मखिलागमा वगमवैभवां
भावयामि हृदि भाविताखिल चराचरां त्रिपुरसुंदरीम् ॥ 15

स्तोत्रराज ममुमात्त मोद महरागमे प्रयतमानसो
कीर्तयन्निह नरोत्तमो विजित वित्तपो विपुलसंपदाम् ।
प्रार्थ्यमान परिरंभ केलि रबला जनैरपग तैषणो
गात्रमात्रपतना वधा वमृतमक्षरं पदमवाप्नुयात् ॥ 16

॥ इति त्रिपुरातिलक स्तोत्रं संपूर्णम् ॥

© 2022 Vedam Nadam